विद्यार्थियों की शाब्दिक सृजनात्मकता का विकास

हंसराज पाल*

मंजुलता शर्मा**

सृजनात्मकता एक विशेष ढंग से चिंतन करने का तरीका होता है। यह व्यक्ति का नैसर्गिक गुण है। हर व्यक्ति थोड़ा बहुत सृजनशील होता ही है। सृजनात्मकता जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है। भाषा इनमें से एक है।

प्रस्तुत लेख में शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की शाब्दिक सृजनात्मकता को विकसित करने के उपायों की चर्चा की गई है। सृजनात्मकता के तत्वों का भी इस लेख में विस्तार से विवरण दिया गया है। इस लेख के आधार पर शिक्षक स्वयं भी विषय और परिस्थितियों के अनुसार बच्चों में भाषा सृजनात्मकता के विकास हेतु पहल कर सकते हैं। इससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया भी प्रभावशील होगी।

भाषा हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसके द्वारा हम विचारों, भावनाओं, तथ्यों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। भाषा पर अधिकार रखने वाले व्यक्ति अच्छे कवि, लेखक, गीतकार, वक्ता बनते हैं (और अपनी सृजन शक्ति के आधार पर नयी-नयी रचनाएँ रचते हैं। सृजनात्मकता व्यक्ति का नैसर्गिक गुण होता है। हर व्यक्ति थोड़ा-बहुत सृजनशील होता ही है। यदि बालकों को प्रारंभ से ही सृजनात्मकता का प्रशिक्षण दिया जाए, तब वे बड़े होकर लेखक, चित्रकार, कवि इत्यादि बन सकते हैं। प्रस्तुत लेख में शाब्दिक सृजनात्मकता विकसित करने के उपाय दिए गए हैं। लेकिन इसके लिए सर्वप्रथम हमें सृजनात्मकता को जानना होगा।

सृजनात्मकता अंग्रेज़ी के क्रिएटिविटी (Creativity) शब्द का हिंदी पर्याय है, जिसका अर्थ है– निर्माण करने की योग्यता (Ability to Create)। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु का सृजन करता है, कोई ऐसी वस्तु बनाता है जिसका निर्माण पहले न हुआ हो तब वह उस व्यक्ति की सृजनात्मकता कहलाती है। यह

* *उपाचार्य*, शिक्षा संस्थान, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्यप्रदेश

** *लेक्चरर*, श्री वैष्णव कॉलेज ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग, इंदौर, मध्यप्रदेश

सृजन किसी वस्तु एवं विचार का हो सकता है। जब किसी समस्या के समाधान के लिए उपाय सोचे जाते हैं, तब उनमें से जो उपाय सबसे अलग होता है वह सृजनात्मक कहलाता है यानि सृजनात्मकता एक विशेष ढंग से चिंतन करने का तरीका होता है। सृजनात्मकता की परिभाषा देते हुए जेम्स ड्रेवर (1971) ने कहा है- 'किसी नयी वस्तु का सृजन करने की योग्यता सृजनात्मकता है।' इस परिभाषा के अनुसार किसी भी नयी वस्तु का निर्माण सृजनात्मकता है। सृजनात्मकता के लिए यह आवश्यक है कि वह वस्तु जनमानस के लिए फायदे की होनी चाहिए। साथ ही केवल नयी वस्तु का निर्माण ही सृजन नहीं है बल्कि पहले से बनी वस्तुओं में अन्य तत्वों को मिलाकर कुछ नया बनाना भी सृजनात्मकता है, जैसे— घड़ी में केल्क्यूलेटर लगाना, चश्मे के साथ टोपी जोड़ना, मोबाइल में इंटरनेट की सुविधा प्रदान करना, कुर्सी में एक बटन लगाना जिससे कुर्सी आरामदायक सोफ़े में बदल जाए, इत्यादि। सृजनात्मकता के लिए सतत् प्रयास करने होते हैं, इसमें समय भी अधिक लगता है, अल्प समय में किसी वस्तु का सृजन नहीं होता है। सृजनात्मकता के लिए पहले से विद्यमान वस्तु में नए तत्वों का समन्वय सौंदर्यात्मक होना चाहिए। जैसे— मिठाइयों की सजावट, सलाद की सजावट, केक की सजावट, महिलाओं द्वारा स्वयं का शृंगार करना इत्यादि सौंदर्यात्मक समन्वय होता है। बहुदिश चिंतन (Divergent Thinking) करना ही सृजनात्मकता है। बहुदिश चिंतन अर्थात् परंपरा से हटकर प्रयोग करना, किसी वस्तु का उसकी प्रकृति से हटकर उपयोग करना, जो किसी ने नहीं सोचा ऐसा चिंतन करना बहुदिश चिंतन है।

सृजनात्मकता के तत्व (Elements of Creativity)

सृजनात्मकता के चार तत्व बताए गए हैं—

1. *मौलिकता (Originality)* - सृजनात्मकता के लिए यह आवश्यक है कि जिस भी वस्तु का निर्माण किया जाए वह मौलिक हो। कहीं से चुराई गई ना हो, न ही नकल की गई हो। दूसरे लोग किसी व्यक्ति की वस्तु को अपना ना बता दें, इसलिए लोग स्वयं द्वारा सृजित वस्तु का पेटेंट करवाते हैं। इस संबंध में एक किस्सा है— एक राजा ने एक बार मुनादी करवाई कि जो कोई दरबार में आकर ऐसी कहानी सुनाएगा जो किसी ने न सुनी हो तो मैं उसे ढेर-सा इनाम दूँगा। तब कई व्यक्तियों ने दरबार में आकर अपनी कहानी सुनाई। दरबार में कुछ एकपाठी व्यक्ति थे जिन्हें एक बार सुनने पर याद हो जाता था। अतः व्यक्तियों के द्वारा अपनी-अपनी कहानियाँ सुनाने पर उन्हें वह याद हो गई और उन्होंने कहा— 'यह कहानी हमने सुनी है।' उन्होंने वह कहानियाँ वैसी की वैसी सुना दीं। तब द्विपाठी व्यक्तियों (जिन्हें दो बार सुनने पर याद हो जाता था) ने कहा कि ये कहानी हमने भी सुनी है और उन्होंने भी वही कहानियाँ सुना दीं तब त्रिपाठी व्यक्तियों (जिन्हें तीन बार सुनने पर याद हो जाता था) ने भी कहानियों को सुना

हुआ बता दिया। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की कहानी को सभी व्यक्तियों ने सुना हुआ बताया। तब एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि मैं आपको एक सच्ची कहानी सुनाता हूँ– एक बार जंगल में आपके राजा आए, उन्हें बड़ी तेज़ प्यास लगी थी। तब मैंने उन्हें पानी पिलाया, खाना खिलाया और उनका आदर-सत्कार किया, तब उन्होंने कहा कि मेरे दरबार में आकर यह कहानी सुनाना, तब मैं तुम्हें एक हजार सोने की अशर्फ़ियाँ दूँगा। वही लेने मैं आज यहाँ आया हूँ। यह सुनकर दरबार में किसी ने नहीं कहा कि यह कहानी हमने सुनी है और राजा ने उस व्यक्ति को ढेर-सा ईनाम दिया।

चूँकि यह कहानी उस व्यक्ति की मौलिक रचना थी, अत: उसमें सृजनात्मकता थी।

2. *नम्यता (Flexibility)*– नम्यता अर्थात् व्यक्ति किसी समस्या के लिए कितनी अलग-अलग दिशाओं में सोचता है। समस्या के समाधान के लिए अनेक तरीकों को अपनाना नम्यता है।
3. *प्रवाहता (Fluency)*– व्यक्ति को किसी समस्या के समाधान के लिए कितनी जल्दी-जल्दी विचार आते हैं (यह उसकी प्रवाहता है)। विचारों की शीघ्र अभिव्यक्ति करना और उन विचारों का स्वतंत्र होना प्रवाहता है।
4. *संलग्नता (Consistency)*– किसी वस्तु का निर्माण करने में लगातार लगे रहना संलग्नता है।

सृजनात्मकता को जानने के पश्चात् अध्यापक को बच्चों में इसके विकास पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि सृजनशील व्यक्ति समाज की अमूल्य निधि होते हैं, उन्हीं पर राष्ट्र तथा समाज की उन्नति तथा उत्थान निर्भर करता है। सृजनात्मकता के दो प्रकार होते हैं– शाब्दिक एवं अशाब्दिक। एक बच्चा अपना सृजनात्मक व्यवहार लिखने में या कविताएँ बनाने में दिखा सकता है। यह उसकी शाब्दिक सृजनात्मकता है। एक बालक अपना सृजनात्मक व्यवहार चित्रकला, पेंटिंग, क्राफ्ट इत्यादि में दिखा सकता है। यह उसकी अशाब्दिक सृजनात्मकता है। कुछ विद्यार्थी शाब्दिक सृजनात्मकता में अच्छे होते हैं, जबकि कुछ की अशाब्दिक सृजनात्मकता अच्छी होती है। एक शिक्षक प्राथमिक विद्यार्थियों की शाब्दिक सृजनात्मकता निम्नलिखित उपाय कर विकसित कर सकता है:

1. शिक्षक विद्यार्थियों को चित्र दिखाकर छोटी-सी कहानी लिखने को दें, कोई शीर्षक देकर उनसे कहानी लिखवाएँ। जैसे– 'एक जादुई लड़की' या 'नन्हा शहजादा' या 'गरीब राजकुमारी'। शीर्षक के बजाय कभी-कभी वाक्य देकर भी विद्यार्थियों से कहानी लिखवाई जा सकती है, जैसे– 'एक शहर में एक बनिया रहता था।'

   इससे विद्यार्थियों की शाब्दिक सृजनात्मकता विकसित करने में मदद मिलेगी।
2. शिक्षक विद्यार्थियों को चित्र दिखाकर या कुछ शब्द देकर उनसे कविता लिखवा सकते हैं। कुछ ऐसे शब्द दे सकते हैं जिनसे

तुकबंदी की जा सकती है, जैसे– सूरज, राजा, गोला, बोला या चंदा, ठंडा, रात, बात इत्यादि। बच्चों को खेलगीत बहुत पसंद होते हैं, और वे उन्हें सुनकर उनके जैसे अन्य गीतों की रचना शीघ्र कर लेते हैं। जैसे–

पानी बरसा छम-छम-छम,
छाता लेकर निकले हम।
पाँव फिसल गया, गिर गए हम,
छाता नीचे, ऊपर हम।

इस खेलगीत को सुनकर बच्चे इसी की तरह यह गीत बना सकते हैं–

'भूत आया ठम-ठम-ठम,
कंबल लेकर भागे हम।
पाँव फिसल गया, गिर गए हम,
भूत ऊपर, नीचे हम।

3. बच्चों से विद्यालय में कई तरह की वस्तुएँ जैसे– पत्तियाँ, पत्थर, पंख, तिनके, चूड़ी इत्यादि मंगवाकर उन पर कुछ वाक्य लिखने को दे सकते हैं, उनके विचार पूछ सकते हैं।
4. बच्चों से उन अनुभवों के बारे में लिखने को कह सकते हैं, जो उन्हें विद्यालय के बाहर प्राप्त हुए हैं या उन्होंने घर से विद्यालय आते समय जो-जो देखा उस पर बातें कर सकते हैं।
5. बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाकर उन्हें कुछ ऐतिहासिक इमारतें (जैसे लाल किला, आमेर का किला, रानी रूपमती का महल, राजबाड़ा), मनोरंजक पार्क, संग्रहालय, बाँध (यशवंत सागर, पुनासा बाँध, चंबल विद्युत परियोजना), नदी, चिड़ियाघर इत्यादि दिखाकर उन पर चर्चा कर सकते हैं, और कुछ लिखवा सकते हैं।
6. बच्चों से ऐसी घटनाओं के बारे में पूछ सकते हैं जो उन्होंने देखी हों; जैसे– बारिश कैसे होती है? दिन-रात कैसे होते हैं?
7. बच्चों के समक्ष कुछ समस्याएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं और उनके समाधान लिखने को दिए जा सकते हैं; जैसे– यदि मनुष्य के पंख लग जाएँ तो क्या होगा? यदि सभी महिलाएँ गंजी हो जाएँ तो क्या होगा? यदि पक्षी मनुष्य की तरह बोलने लगें तो क्या होगा? इस तरह के प्रश्नों के उत्तर उनसे लिखवाकर या पूछकर प्राप्त किए जा सकते हैं और उनकी सृजनात्मकता को विकसित किया जा सकता है।, उन्हें नए-नए विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
8. बच्चों को विभिन्न शब्द देकर उनके लिए पहेलियाँ बनाने को कहा जा सकता है। पहेलियाँ बनाने के लिए उन्हें तुकबंदी वाले शब्द दिए जा सकते हैं; जैसे - राजा-बाजा, आग-जाग, काले-खाले।
9. बच्चों को चित्र दिखाकर स्वयं को उस स्थिति में आरोपित करने को कहा जा सकता है। जैसे– यदि तुम शेर के मित्र होते तो क्या करते? यदि तुम खरगोश की जगह होते तो क्या करते? ये बंदर क्या सोच रहा है? छोटी लड़की अपनी मम्मी से क्या कह रही है? इस तरह के प्रश्न पूछकर

बच्चों द्वारा स्वयं को एक कल्पित स्थिति में डालकर कौन क्या कहेगा, यह कल्पना करने और उन्हें कैसा महसूस होगा, इसके लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

10. बच्चों को चित्र दिखाकर या कोई घटना सुनाकर उसके बाद की स्थिति के लिए अनुमान लगाने को कहा जा सकता है। इससे बच्चे सोचने के लिए प्रेरित होते हैं कि आगे क्या होगा और अपने विचारों को शब्द देते हैं; जैसे – गीदड़ द्वारा युद्ध न लड़ने के लिए बोलने पर शेर ने क्या किया होगा? वह लड़का अब गुफ़ा से कैसे बाहर निकलेगा?
11. बच्चों को बात करने के अवसर देकर भी उनकी शाब्दिक सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है। हमारे विद्यार्थियों में बच्चों के बातें करने पर उन्हें रोका जाता है। कई बार तो अध्यापक द्वारा उन्हें दंडित भी किया जाता है। जबकि यदि बच्चों को कक्षा में बातें करने के अवसर दें तो वे नए-नए शब्द बोलना सीखते हैं और स्थितियों पर विचार भी करते हैं; जैसे – कई बार वे शिक्षिका को देखकर बातें करते हैं कि आज मैडम ने क्या पहना है, कल उन्होंने यह नहीं पहना था, वे क्या बोल रही हैं, चित्र में ये बालक क्या कर रहा है, इत्यादि।
12. उपरोक्त उपायों के अलावा शिक्षक स्वयं भी अपने विषय कालांश में छात्रों से प्रश्न करके उन्हें सोचने व बोलने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। नए-नए विचारों के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। स्वयं मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग कर छात्रों को भी प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

संदर्भ

अम्बुकेन, टी, 1983, *दि सोशल साइकोलॉजी ऑफ क्रिएटिविटी*, स्प्रिंगर-वरलेग, न्यूयॉर्क

बरॉन, एफ, 1969, *क्रिएटिव परसन एण्ड क्रिएटिव प्रोसेस*, हॉल्ट, रिनहार्ट एण्ड विन्सटन, न्यूयॉर्क

कुमार, कृष्ण, 1996, *बच्चे की भाषा और अध्यापक : एक निर्देशिका,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली

पाल, हंसराज, 2006, *प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान*, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

पाल, हंसराज एवं शर्मा, मंजुलता, 2007, *प्रतिभाशालियों की शिक्षा,* शिप्रा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली